रानी दुर्गावती

क्र. ६०६ | रु. १०

तलाश अपनी जड़ों की

जब वे मुड़ कर अपने बचपन के उन दिनों की ओर देखते हैं, जब उनके व्यक्तित्व का विकास हो रहा था, तब अनेक भारतीय बड़े स्नेह से अमर चित्र कथा की उन सचित्र पुस्तकों को याद करते हैं, जिन्होंने उनके जीवन में अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। यह एसीके – अमरचित्र कथा ही थीं जिन्होंने उन्हें अपनी भव्य विरासत की पहली झलक दिखलाई थी।

अमर चित्र कथा १९६७ में पेश की गयीं। इस समय चुनने के लिए अमर चित्र कथा की ४०० से ज़्यादा पुस्तकें उपलब्ध हैं। संसारभर में इनकी ९ करोड़ से ज़्यादा प्रतियां बिक चुकी हैं।

अब अमर चित्र कथा की पुस्तकें और भी बड़े पैमाने पर उपलब्ध हैं – भारतभर में १००० + पुस्तक विक्रेताओं के पास। अपने नज़दीकी विक्रेता का पता जानने के लिए यहां लॉग ऑन करें : www.ack-media.com. अगर किसी पुस्तक विक्रेता तक पहुंचना आसान न हो तो आप सभी पुस्तकें हमारे ऑनलाइन स्टोर www.amarchitrakatha.com से ख़रीद सकते हैं। हम संसारभर में हर जगह पुस्तकें बड़ी जल्दी पहुंचा देते हैं।

हमारे पुस्तकों के भंडार में से आपको अपनी मनपसंद पुस्तक चुनने में आसानी हो, इसके लिए हमने पुस्तकों को पांच वर्गों में विभाजित किया है।

महाकाव्य तथा धार्मिक कथाएं
महाकाव्यों एवं पुराणों की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ

भारतीय साहित्य
भारतीय साहित्य की मनमोहक कहानियाँ

लोक कथाएं तथा हास्य कथाएं
सदाबहार लोक कथाएं, दंत कथाएं तथा विवेक और हास्य से भरी कहानियाँ

शूरवीर
वीर पुरुषों तथा महिलाओं की मन छूने वाली कहानियाँ

दूरदृष्टा
विचारकों, समाज सुधारकों तथा राष्ट्र निर्माताओं की प्रेरक कहानियाँ

समकालीन साहित्य
भारतीय समकालीन साहित्य की उत्कृष्ठ कहानियाँ

कथा	चित्र	संपादक	मुखपृष्ठ
कमला चन्द्रकांत	राम वाईरकर	अनंत पै	सी.एम्.विटणकर

Amar Chitra Katha Pvt Ltd

ISBN 978-81-8482-332-5
Published by Amar Chitra Katha Pvt. Ltd., 204, 2nd Floor,
Dhantak Plaza, Makwana Road, Gamdevi, Marol, Andheri - 400059, India.
For Consumer Complaints Contact Tel : + 91-2249188881/2
Email: customerservice@ack-media.com

रानी दुर्गावती

दुर्गावती महोबा के राजपूत सरदार की बेटी थीं। महोबा तब बड़ा शक्तिशाली था। दुर्गावती सधी हुई घुड़सवार और निशानेबाज़ थीं और अपने पिता के साथ अक्सर शिकार करने जाया करती थीं।

एक दिन दोनों जंगल में चले जा रहे थे –
पिता जी, मैंने दलपत शाह की वीरता के बारे में बहुत कुछ सुना है। वे कौन हैं ?
वे गढ़ के गोंड राजा संग्राम शाह के पुत्र हैं।

राजकुमार ?
हाँ– पर नीची जाति के।

उनके पूर्वज, जदुराय गढ़ के कालाचूरी राजा के सेवक थे।
अच्छा। फिर ?

जदुराय ने सत्ता और रुतबा पाने के लिए एक गोंड सरदार की पुत्री से विवाह किया ताकि ...

... राजपूत राजा का तख़्ता पलट सके।
हुँ ऊँ ऊँ –

इस तरह गोंडों ने हमारे पूर्वजों से जो सदियों से वहाँ शासन कर रहे थे, उनका राज हथिया लिया।

दुर्गावती कुछ देर सोचती रही। फिर –
पिताजी, हम राजपूतों को मार भगाना आसान नहीं। गोंड अवश्य ही वीर और शक्तिशाली होंगे।
लगता है दुर्गावती दलपत और गोंडों की प्रशंसक है।

उधर गढ़ में -
तैयार हो गये, दलपत?

हाँ, पिता जी — चलो।
मैं बड़ा उतावला हूँ - बाघ के शरीर में तुम्हारे तीर देखने को।

वे जब कुछ दूर निकल गये -
देखो, दलपत – वह रहा बाघ!

लेकिन संग्राम के मुँह से बोल निकलने से पहले ही दलपत ने धनुष उठा लिया था।

उसका बाण उड़ चला।

संग्राम का सीना गर्व से फूल उठा।
सुंदर ही नहीं, वीर और साहसी भी है मेरा पुत्र। राजकुमारी से विवाह करूँगा इसका।

इसके योग्य कोई है तो महोबा की राजकुमारी दुर्गावती।

संग्राम शाह ने यह प्रस्ताव दुर्गावती के पिता को भेजा।
आपके कुल से हमारा सम्बन्ध स्थापित हो, यह हमारे लिए बड़े सम्मान की बात होगी। मैं आपकी सुपुत्री, दुर्गावती का हाथ अपने पुत्र, दलपत के लिए माँगता हूँ।
– संग्राम शाह

दलपत निस्संदेह राज-कुमार है – परंतु चंदेला वंश की राजकुमारी का विवाह गोंड से हो? नहीं– कभी नहीं! संग्राम शाह, तुम्हारे लिए यह सम्मान की बात होगी, पर हमारे कुल को कलंक लग जायेगा।

दुर्गावती के पिता ने खेद के साथ ना कर दी।
यह अपने सरदार को दे देना।

दासी भागी-भागी दुर्गावती के पास आयी।
गोंड राजा ने अपने बेटे के लिए तुम्हारा हाथ माँगा है।
दलपत ?

हाँ!
पिताजी ने क्या कहा?

दासी का मुँह लटक गया।
वे बड़े कठोर हैं।
कैसे? उन्होंने क्या कहा? क्या किया?

उन्होंने कहा – कहा– गोंड चाहे राजकुमार हो– उसके साथ चंदेलों की राजकुमारी का विवाह कैसे हो सकता है।

यह पिताजी की भूल है। पुरुष के बारे में उसके जन्म से नहीं, कर्म और चरित्र से राय बनानी चाहिए।

दुर्गावती मन में निश्चय कर के महल के अंदर गयी।
मैं विवाह दलपत से करूँगी – चाहे कुछ भी हो! ऊंचे कुल के कायर की अपेक्षा नीचे कुल के वीर की पत्नी बनना पसंद है मुझे!

उसने दलपत को पत्र लिखा–
...सामाजिक बाधाएँ निरर्थक हैं। मैं अपना हृदय तुम्हारी वीरता पर हार चुकी हूँ। मुझे विश्वास है कि तुम मुझे प्राप्त करने का प्रयत्न करते रहोगे...

उसने दासी से कहा –
यह पत्र गोंड राजा के पुत्र को पहुँचाना है – पर – किसी को पता न चले।
मुझपर भरोसा रखो, राजकुमारी।

उस बीच महोबा के राजा की अस्वीकृति गढ़ में दलपत के पास पहुँच गयी।
कैसा घोर अपमान! पिता जी, क्यों तुमने इस तरह नीचे गिराया अपने आपको!

हमारी जाति में अच्छी कन्याओं की कमी नहीं है। जिससे चाहता उससे मेरा विवाह हो जाता। क्यों उस घमंडी राजपूत के आगे हाथ फैलाया!

वह विचारों में डूबा था कि दासी वहाँ आयी।
सरकार, मेरी स्वामिनी, महोबा की राजकुमारी दुर्गावती ने चिट्ठी भेजी है।

दलपत ने पत्र पढ़ा।
पिता जी ने जिसे चुना वह मामूली राजकुमारी नहीं है!
मैं जाकर क्या कहूँ राजकुमारी से?

कहना– मैं आऊँगा।
यही कहूँगी! यही कहूँगी!

दासी के जाने के बाद दलपत संग्राम के पास पहुँचे।
पिता जी, मैं दुर्गावती से ही विवाह करूँगा — उसके पिता मान जायें तो उनकी सहमति से – नहीं तो बिना उनकी सहमति के।

संग्राम बड़े प्रसन्न हुए।
मैं अभी अपने आदमियों को महोबा पर कूच करने की आज्ञा देता हूँ।

महोबा खबर पहुँची –
महाराज, गोंडों ने चढ़ाई की है। उनका राजकुमार बहुत बड़ी सेना लेकर आ रहा है।

राजपूत राजा ज़रा देर चुप रहे.
बुद्धिमानी इसी में है कि शांति के साथ दुर्गावती का हाथ उसके हाथ में दे दूँ। इसमें अपमान भले ही सहना पड़े।

फिर उन्होंने आदेश दिया।
शांति का झंडा फहराओ। मैं परकोटे से निकल कर राजकुमार की अगवानी करूँगा। उससे दुर्गावती का विवाह करूँगा।
जो आज्ञा, महाराज।

राजा की आज्ञा का पालन हुआ।

दलपत का राजसी स्वागत किया गया।
तुम जीते, दलपत। दुर्गावती का तुमसे विवाह होगा!

धूम-धाम और हँसी-खुशी के साथ दलपत और दुर्गावती का विवाह हुआ।

कुछ दिन बाद दलपत अपने ससुर का आशीर्वाद लेकर अपनी पत्नी के साथ गढ़ को रवाना हुए।

संग्राम शाह उनके स्वागत को उतावले हो रहे थे।
बेटी, तुम गढ़ की लक्ष्मी हो। अब दलपत तुम्हें साथ लेकर राज-काज करेगा। मेरे लोग भाग्यवान् हैं, जो तुम जैसी रानी उन्हें मिली।
मैं हमेशा उनके सुख-दुख और हित का ध्यान रखूँगी, पिता जी।

साल भर बाद दुर्गावती ने पुत्र को जन्म दिया।
इसका नाम बीर नारायण रखेंगे।
नाम गढ़ के भावी राजा के लिए उपयुक्त है।

तीन बरस बीत गये ; बीर नारायण किलकारियाँ मारकर खेलने लगा।
मेरे जैसा सुखी कोई परिवार नहीं होगा गढ़ में !

परंतु सुख के दिन जल्दी ही बीत गये। दलपत गम्भीर रूप से बीमार पड़े।

एक दिन दुर्गावती बीर नारायण के साथ बाग़ में टहल रही थीं कि –
रानी जी! हमारे राजा...

दलपत की मृत्यु हो गयी! दुर्गावती विधवा हो गयीं। उन्हें पहला विचार यही आया कि राजपूतनी हूँ, पति के साथ सती हो जाऊँ। परंतु--
नहीं! अपने बेटे की ख़ातिर मुझे यह शोक सहना होगा। आगे बहुत-कुछ करना है।

मैं अपने कुल की मर्यादा निभाऊँगी और जब तक यह बड़ा नहीं हो जाता, साहस से राज-काज करूँगी।

रानी दुर्गावती ने जल्दी ही जनता के दिल में घर कर लिया-
रानी हमारी माता के समान हैं।
वे किसी को क्षण भर के लिए भी दुखी नहीं देख सकतीं।
सच कहते हो। न्याय भी इनके जैसा कोई नहीं कर सकता।

एक दिन -
रानी जी, बाज़ बहादुर* फिर चढ़ आया है!
घबराओ मत! मैं उसे खदेड़ दूँगी!

अपनी निडरता से रानी ने सैनिकों में उत्साह जगाया।
हमारे पास २०,००० घुड़सवार सैनिक और १००० हाथी हैं। युद्ध की तैयारी करो।

घमासान लड़ाई हुई और मैदान रानी व
उनकी सेना के हाथ रहा।

पर बाज़ बहादुर हठ पर अड़ा रहा। उसने और कई आक्रमण किये, लेकिन रानी ने हर बार उसे हराया और उसकी सेना घटती गयी।

तथापि कई लड़ाइयों के बाद –
बाज़ बहादुर से बार-बार की लड़ाई बड़ी महँगी पड़ी है। हमारा खज़ाना खाली हो गया है।

रानी चिंता में पड़ गयीं और विचार करने लगीं।
मेरा मत है कि प्रजा पर कर बढ़ाना चाहिए।
नहीं। धन युद्ध में लगा है, युद्ध से ही वापस लायेंगे।

सेना तैयार करो। हम आस-पास के छोटे राजाओं पर चढ़ाई करेंगे।

और उन्होंने अनेक लड़ाइयाँ लड़ीं।

हर लड़ाई में जीत रानी और उनके सैनिकों की हुई।
जितना भी माल मिले, ले चलो। परंतु ख़बरदार— नगर का कुछ न बिगड़े।

राज्य का कोष जल्दी ही फिर से भर गया।
अब हमें नागरिक मामलों और जनता के हित पर ध्यान देना होगा।

उनकी छत्रछाया में गढ़ की जनता फूलने-फलने लगी।
यह रानी का ही प्रताप है कि हमारा गढ़ दूसरों के चंगुल से बचा हुआ है।
यह हमारा सौभाग्य है कि राज-कुमार ने इनसे विवाह करने का निर्णय किया।

कई वर्ष बीत गये। बीर नारायण हट्टा-कट्टा नौजवान बन गया। उसे हर तरह की शिक्षा रानी स्वयं देती थीं। रानी को उसकी अपूर्व प्रगति पर बड़ा गर्व था।
गढ़ के भावी राजा का निशाना काफ़ी सधा हुआ है।

रानी की एक ही लगन थी कि कितनी जल्दी बीर नारायण को सिंहासन पर बिठायें। जनता के हित का ध्यान तो उन्हें हमेशा बना ही रहता था। एक दिन –
रानी जी, कल रात हमारे गाँव में बाघ देखा गया।
कहाँ?

रानी को शिकार का शौक़ था और दलपत की की तरह, बाघ के शिकार का खास तौर से।
बाघ को मारे बिना मैं एक बूँद पानी नहीं पीयूँगी। मुझे अपने गाँव ले चलो।
बाघ अंधेरा घिरने के बाद ही निकलेगा।

रानी घोड़े पर सवार होकर उस ग्रामीण के साथ चल दीं।

सूरज डूबते-डूबते वे गाँव जा पहुँचे।
यहीं ठहर जायें, रानी जी। अंधेरा घिरने वाला है। फिर बाघ जल्दी ही आयेगा।

अचानक -

तुम पेड़ पर चढ़ जाओ। मैं इसका शिकार करती हूँ।

उन्होंने धनुष पर बाण चढ़ाकर निशाना साधा।

बाघ को ख़तरे का भान हो गया और वह गंध के सहारे झपटा।

रानी ने फुर्ती से अपने को बचाया...

... और धनुष-बाण फेंक कर...

... बंदूक उठा ली।

बाघ को दूसरा वार करने का मौक़ा नहीं मिला। वह ढेर हो गया।

ग्रामीण पेड़ से उतर कर बाघ के पास आया।
लोथ को हटवा दो और इसकी खाल मुझे भेज देना।

रानी अकेली अपने महल को लौट गयीं।

गढ़ जैसे-जैसे समृद्ध हुआ, उसकी चर्चा भी फैली। मुग़ल सम्राट अकबर का ध्यान भी उसपर गया।
इस सूबे को हमने अब तक फ़तह क्यों नहीं किया? इसे हमारे साये की ज़रूरत है।
आलमपनाह, शुरू से ही कोई भी बादशाह उस सूबे को क़ाबू में नहीं कर पाया है। और ...

.. अब रानी दुर्गावती की हुकूमत में तो उसे जीतना नामुमकिन है।

अकबर ने उसे घृणा की दृष्टि से देखा।
गढ़ में औरत की हुकूमत है और तुम कहते हो उसे जीतना नामुमकिन है! आसफ़ ख़ाँ को बुलाओ!

कारा और गढ़ के पास वाले पूर्वी सूबों का सूबेदार आसफ़ ख़ाँ दरबार में हाज़िर हुआ।
गढ़ पर हमला करो। रानी को घुटने टेकने होंगे।
बड़ी आसानी से, आलमपनाह!

आसफ़ ख़ाँ ने विशाल सेना ले कर गढ़ की ओर कूच किया।

एक भयभीत सैनिक ने रानी को समाचार दिया।
रानी जी, आसफ़ ख़ाँ के नेतृत्व में मुग़ल सेना गढ़ आ रही है। हम बचेंगे नहीं।

पर रानी ज़रा भी नहीं घबरायीं।
मेरा कवच लाओ और मेरा हाथी तैयार करो। वीर नारायण से भी कहो युद्ध के लिए तैयार हो जाये। मैं खुद अपनी सेना के साथ शाही फ़ौज से लोहा लूँगी।

उनके एक सलाहकार ने उन्हें रोकने की कोशिश की।
हमारी सेना छितरायी हुई है। उसे जमा करने का समय नहीं। बुद्धिमानी शायद आसफ़ ख़ाँ से समझौता करने में है।
कभी नहीं। अकबर खुद आया होता तो इसपर विचार करती। अब हर्गिज़ नहीं।

कितने सैनिक हमारे पास यहाँ हैं ?
कुछ सौ।

मैं उन्हें लेकर आगे जाती हूँ और दुश्मन को रोकूँगी। तब तक तुम सेना जमा कर लो।

एक क्षण भी नष्ट किये बिना रानी मुट्ठी भर सैनिकों को लेकर आसफ़ खाँ की विशाल सेना का सामना करने चल पड़ीं।

एक घंटे बाद –
दुश्मन को रोकने के लिए वह तंग घाटी बहुत उपयुक्त है।

रानी और उनके सैनिकों ने नदी पार की, जो लगभग सूखी पड़ी थी ...

... और दूसरे किनारे पर डेरा डाला।

कुछ देर आराम करके वे तंग मार्ग के परले छोर पर गये।
इसके आगे मार्ग चौड़ा होता जाता है और हमारे लिए वह ठीक नहीं। तुम दोनों ओर पहाड़ियों पर मोर्चा बाँधो और मैं कुछ सैनिकों के साथ यहीं रहूँगी।

उधर आसफ़ खाँ रानी की सेना के आने की खबर पाकर घाटी की तरफ़ बढ़ा।
हमारे जासूस खबर लाये हैं कि रानी के पास मुट्ठी भर सिपाही ही हैं।
फिर भी हमें रानी की ताक़त को कम नहीं समझना चाहिए।

घाटी से रानी और उसके सिपाही आसफ़ खाँ पर दृष्टि जमाये हुए थे
शाही सेना सचमुच ज़बर्दस्त है! मैं यही मनाती हूँ कि मेरे सिपाही साहस न गँवायें।

सेनाओं की मुठभेड़ हुई।
आगे बढ़ो! ये नीच हमारी पावन भूमि को अपवित्र न करने पायें!

रानी और उनके सिपाही इस जोश से लड़े कि आसफ़ ख़ाँ और उसके सैनिक उनका सामना न कर सके।
मैंने क्या रानी की ताक़त का ग़लत अंदाज़ा लगाया?

शाम होने तक आसफ़ ख़ाँ की सेना के छक्के छूट गये।
हमारे बहुत ज़्यादा सिपाही मारे गये। डेरे पर लौट चलें।

भगोड़ों का पीछा करो। अपनी पवित्र भूमि से निकाल बाहर करो।

एक-एक मुग़ल सैनिक को खदेड़ देने के बाद –
हम या तो डेरे लौट चलें और रात को अकस्मात धावा बोलें या यहीं रहें और सुबह फिर लड़ें।
अब वे लौटकर लड़ने नहीं आयेंगे। हमारे सैनिक थक गये हैं। रात को डेरे में आराम करना चाहिए।

आराम किया तो रात में आसफ़ ख़ाँ पहाड़ियों पर चढ़कर अपना तोपख़ाना जमा लेगा।
रानी ठीक कहती हैं।
मैं कहता हूँ आसफ़ ख़ाँ नहीं लौटेगा।
बूढ़े सलाहकार ने इतना ज़ोर दिया कि उसकी बात मान ली गयी।

अगले दिन वही हुआ जो रानी ने सोचा था। और भी बुरा यह हुआ कि आसमान में घने बादल छा गये।
हिम्मत रखो! हम हार नहीं मानेंगे। हमला करो – मैं तुम्हारे साथ हूँ!

रानी अपने हाथी पर सवार होकर सबसे आगे हो लीं। तभी घनघोर बरसात होने लगी।

बीर नारायण पहले ही धावे में घायल हो गया।
इसे सम्हालकर यहाँ से हटा दो।

जिन सैनिकों का साहस डगमगा रहा था, उन्होंने इस परिस्थिति की आड ली।
हम भी इसके साथ निकल जायें और जान बचायें!
रानी आगा-पीछा नहीं सोच रही है उन्हें समझौता करना चाहिए।

रानी फिर भी लड़ती रहीं। उनकी कनपटी में तीर लगा, तो उन्होंने तीर को खींच कर निकाल फेंका ...

... और लड़ती ही रहीं।

फिर उनकी गर्दन में तीर लगा। उनके लिए हाथी पर बैठे रहना भी दूभर हो गया।
मुझे घायल देखा तो मेरी सेना का बचा-खुचा साहस भी जाता रहेगा। बुद्धिमानी इसी में होगी कि अभी पीछे हट जाऊँ और क़िले से लड़ाई जारी रखूँ।

परंतु इस योजना को पूरा करने का अवसर उन्हें नहीं मिला। वे नदी के किनारे पहुँचीं तो -
हम पार नहीं जा सकते। नदी में अथाह पानी चढ़ आया है।

रानी के पास सोचने-विचारने का समय नहीं था। शत्रु बढ़ा आ रहा था।
रानी जी, मैं आपको सुरक्षित जगह ले चलता हूँ।

रानी ने यह सुझाव ठुकरा दिया।
नहीं! हो सकता है मैं शत्रु के हाथ पड़ जाऊँ। लड़ाई में तो मैं हार गयी, परंतु अपना नाम और मान नहीं हारूँगी।

रानी ने ना ख़ंजर निकाला –
अपमान के जीवन से सम्मान की मौत मुझे ज़्यादा पसंद है।

और वीर राजपूतनी की तरह रानी ने ख़ंजर अपनी छाती में भोंक लिया।

वीरांगना

रानी दुर्गावती

घने जंगलों का क्षेत्र, गोंडवाना अब मध्य प्रदेश का अंग है। एक जमाने में यह देश से अलग - थलग था। फिर भी उत्तर भारत के सांस्कृतिक और सामाजिक प्रभाव से यह नहीं बच सका। ऋषि - मुनियों की यह पुण्यस्थली थी। यहां कभी रानी दुर्गावती शासन करती थीं। गोंड़ों के इस प्रदेश पर राजपूत सरदारों ने अपना अधिकार जमा लिया। कुछ समय के लिए गोंड़ों ने उनकी अधीनता स्वीकार कर ली, पर शीघ्र ही उनमें स्वाधीनता की भावना जागी और धीरे - धीरे उन्होंने चार स्वतंत्र राज्य स्थापित कर लिए। उनमें एक राज्य गढ़मंडल का था और उसकी स्थापना की थी जदुराय ने। यह लगभग ६०० वर्ष पुरानी बात है।

रानी दुर्गावती जदुराय के वंशज दलपत राय की विधवा थीं। ५०० सैनिकों के साथ उन्होंने मुगल सम्राट अकबर की सेना से लोहा लिया। पीढ़ी दर पीढ़ी लोग इस शौर्य गाथा को गर्व से दोहराते आ रहे हैं। प्रस्तुत है यही कथा।

अमर चित्र कथा के अन्य वीरांगना:
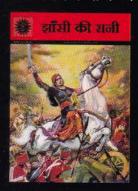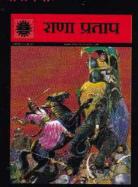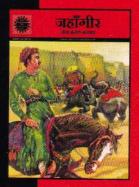
ये भी पढ़ें :

महाकाव्य और पौराणिक कथाएं
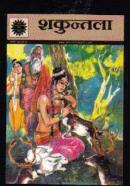
भारतीय उत्कृष्ट साहित्य

हास-परिहास और दंतकथाएं

दिव्यदृष्टा

ISBN 978-81-8482-332-5
9 788184 823325